

# खराब अनाजों से ईथनोल बनाएं तो 30 हजार करोड़ विदेशी मुद्रा की बचत

■ धान व मक्का उत्पादक किसानों को फायदा, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर मिलेंगे

कानपुर, 10 अगस्त। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर ग्रेन बेस्ड डिस्टिलरीज आपरेशन एंड इकोनामिक्स विषय पर आनलाइन एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि पेट्रोल में आनाज आधारित ईथनोल का मिश्रण का विषय मूलतः इस थीम के अनुरूप है। उन्होंने अपने आरंभिक संबोधन में 21वीं



कार्यशाला को सम्बोधित करते निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन।

सदी के भारत के लिए ईथनोल की प्राथमिकता इंगित करते हुए कहा कि इसका शर्करा उद्योग, किसानों की आय, ऊर्जा संरक्षण तथा पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव है। शर्करा उद्योग के लिए 2025 तक पेट्रोल में 20 फीसदी ईथनोल के मिश्रण के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु फीड स्टोक की उपलब्धता सुनिश्चित करने की अपनी एक सीमा है। जबकि अपेक्षित ईथनोल की आवश्यकता लगभग एक हजार करोड़ लीटर तक आकी गई है। निदेशक ने कहा कि सरप्लस के रूप में उत्पादित चीनी, चावल, मक्का और यहां तक

खराब हो रहे अनाजों के माध्यम से ईथनोल उत्पादित कर विदेशी मुद्रा के रूप में सालाना 30 हजार करोड़ रुपये की बचत की जा सकती है। इस प्रकार 165 लाख टन अनाज की इस खपत से धान और मक्का उत्पादक किसानों को फायदा होगा तथा निवेश का एक नया क्षेत्र तैयार होगा। और इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर भी प्राप्त होंगे।

आल इंडिया डिस्टिलरीज एसोसिएशन के महानिदेशक वी.एन. रैना ने सरकार की नीतियों की सराहना की, जिसमें विशेष कर उन नीति की जिसके अन्तर्गत भारतीय खाद्य निगम द्वारा ईथनोल उत्पादकों को 20 रुपये प्रति किलो के रियायती दर पर चावल उपलब्ध कराकर तेल कंपनियों द्वारा उससे निर्मित ईथनोल को 56.86 रुपये प्रति लीटर के आकर्षक दर पर क्रय किया जा रहा है। जल्द ही चावल आधारित ईथनोल इकाइयां पूरे देश में उपलब्ध होगी। कार्यशाला को के.पी. सिंह, एच.एस. शुक्ला आदि ने अपने व्याख्यान दिये।

## Promotion of bio-fuel for better environ advocated

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

National Sugar Institute Director Prof Narendra Mohan while addressing a webinar on 'Promotion of bio-fuel for a better environment' organised as part of Azadi Ka Amrit Mahotsav at the institute on Tuesday, said ethanol was one of the major priorities of 21st century in India as it had a positive impact on profitability of sugar industry, income of farmers, energy security and on environment.

He said the sugar industry had a limitation of providing feed-stocks to cope up with the requirement for 20 per cent blending by 2025, where estimated ethanol requirement shall be about 1,000 crore litre. He said thus utilisation of surplus sugar, rice, maize and even the use of deteriorated grain for ethanol production



Director, NSI, Prof Narendra Mohan addressing a seminar on promotion of biofuel at Institute on Tuesday.

may result in saving of foreign exchange to the extent of Rs 30,000 crore per annum. In his inaugural address, Prof Mohan said the utilisation of 165 lakh tons of grain would benefit the maize and paddy farmers with creation of new investment opportunities, which would also result in job creation in rural areas. Director general of All India Distillers' Association, VN Raina, appreciated the government policies, particularly, for providing rice from the Food Corporation of India to

ethanol producers at a concessional rate of Rs.20 per kg and attractive price of Rs.56.87 per litre for ethanol made out of it. He expressed confidence for faster implementation of the rice based ethanol units in the country. Director (operations), Radico-Khaitan Ltd, KP Singh, presented an alcohol production model to be followed in the country keeping in view availability of feed stocks and requirement of ethanol for blending and in potable liquor and chemical industry. He said

the alcohol requirement in all these sectors was continuously increasing and now due to COVID-19 use of alcohol-based sanitisers had also created significant demand for it. He emphasised on the need to earmark ethanol sufficient, ethanol deficient and ethanol very deficient states and accordingly consider it. He said looking into the availability of the raw material in the region, the ethanol units may be set up. Vice-president of Oasis Distillers Ltd, HS Shukla, presented details of technology for producing ethanol from maize, rice, millet (bajra) and wheat. He said the byproduct of the grain-based ethanol unit, distillers dried grains with soluble (DDGS) was important as being excellent cattle feed and it fetched very good prices enabling such units to attain higher profitability.